4

बादशाह औरंगज़ेब का समय
(सन् 1658 - 1707)

औरंगजेब बादशाह बना

सन् 1658 मे बादशाह शाहजहां बुरी तरह से बीमार पड़ गया। सब लोग यह मानने लगे कि बादशाह की कुछ ही दिनो मे मृत्यु हो जायेगी। शाहजहां के चार पुत्र थे - दारा, औरंगज़ेब, शुजा और मुराद। चारो भाई खुद बादशाह बनना चाहते थे। आगरा मे शाहजहां ने बड़े बेटे दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। मगर उसके बाकी तीन बेटो ने इस बात को नही माना। सब अपनी-अपनी सेना लेकर तख़्त हथियाने के लिए आगरा की ओर चल दिए। भाइयो के बीच कई युद्ध हुए और अंत मे औरंगज़ेब सफल रहा।

अपने पिता शाहजहां के जीते जी औरंगज़ेब ने अपने आप को बादशाह घोषित कर लिया और उनको उनकी मृत्यु तक 12 वर्ष कैद मे रखा। इसके कारण औरंगज़ेब को काफी आलोचना का सामना करना पड़ा।

इन शब्दों के मतलब बताओ - 1. उत्तराधिकारी 2. तख़्त हथियाना 3. आलोचना

किसानों-ज़मींदारो के विद्रोह और लगान में कमी

हर बादशाह की तरह औरंगज़ेब को भी कई समस्याओं से जूझना पड़ा।

एक बड़ी समस्या तो किसानो और ज़मीदारो की तरफ से थी। तुम जानते हो, आगरा और बयाना के आसपास के जाट किसान और ज़मीदार विद्रोह करने लगे थे। इस तरह के छोटे-बड़े कई विद्रोह साम्राज्य में जगह-जगह होने लगे।

पंजाब में कई किसान, कारीगर और व्यापारी सिख धर्म को मानते थे, जिसमे यह सिखाया जाता था कि सब इंसान बराबर हैं। सिख गुरु, गुरु तेग़ बहादुर गांव-गांव मे जाकर लागो के बीच सिख धर्म का प्रचार करते थे। इस माहौल मे किसानो में जागीरदारो व राजाओं का सामना करने का साहस बन रहा था। इससे शासन को डर बन गया कि कहीं किसान भड़क न जाएं।

गुरु तेग़ बहादुर के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए औरंगज़ेब ने उन्हें देहली लाकर बन्दी बना लिया। कुछ समय बाद देहली में उन्हें मार डाला गया।

इसके बाद उनके पुत्र गुरु गोविंद सिंह ने सिखो की सेना बनायी और वे पंजाब के राजाओं से टक्कर लेने लगे। ये राजा मुग़ल राज्य के अधीन थे। औरंगज़ेब ने इन राजाओं की पूरी मदद की, और सिखो को दबा के रखा। मगर आने वाले समय मे सिख फिर से एक बड़ी सेना के साथ मुग़लो का मुकाबला करने लगे।

मुग़ल साम्राज्य के उत्तर पश्चिम में अफग़ान कबीले रहते थे। ये कबीले इस्लाम धर्म के रोशनिया संप्रदाय को मानते थे। ये कबीले मुग़लो से स्वतंत्र होकर अपना अलग राज्य बनाना चाहते थे। उन्होने सन् 1665 से विद्रोह करना शुरू किया। औरंगज़ेब ने राजपूतो की मदद से रोशनिया लोगो के विद्रोह को दबाया।

ये औरंगज़ेब के समय मे होने वाले कुछ बड़े विद्रोह थे। मगर इनके अलावा कई और छोटे-छोटे विद्रोह भी हुए। इन विद्रोहों के कारण जागीरदारो को अपनी जागीरो से कम लगान मिलने लगा।

जागीरों की कमी

मुग़ल राज्य मे अधिकारियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। पर अब उनके लिए पर्याप्त जागीरें नही थी। इतने सारे अमीरो को वेतन में बड़ी-बड़ी जागीरें देने के लिए राज्य मे गांव-शहर कम पड़ने लगे थे। जो थे, उनसे भी लगान कम मिल रही थी।

जागीरो की कमी के कारण जागीरदारो में असंतोष और तनाव बढ़ने लगा। औरंगज़ेब कहता था - "मेरी स्थिति एक ऐसे वैद्य जैसी है, जिसके पास एक अनार है और सौ बीमार व्यक्ति हैं। वह उस एक अनार को किस-किस को दे।"

इस स्थिति से बचने का एक विकल्प था जागीरो के अंदर ही खेती बढ़ाना। आखिर इसी तरह जागीरदारो की आमदनी बढ़ सकती थी। पर जागीरदारो को इस काम मे कोई रुचि नही थी, क्योकि उनकी जागीर का तबादला होता रहता था।

साम्राज्य फैलाने की कोशिश

औरंगज़ेब के सामने जागीर की कमी से निपटने के लिए एक और विकल्प था। वह था अपने साम्राज्य का विस्तार करना और दूसरे राज्यो को अपने राज्य मे मिला लेना।

मुग़ल साम्राज्य के पूर्व मे अहोम राज्य था। यह आज के असम राज्य मे था। 1663 में औरंगज़ेब के एक अमीर - मीर जुमला ने अहोम राजा को हराकर उसके राज्य को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया। मगर कुछ ही वर्षो में अहोम राजा मुग़ल सेना को अपने राज्य से भगा पाया और फिर से स्वतंत्र हो गया।

औरंगज़ेब के समय में दक्षिण मे दो महत्वपूर्ण राज्य थे - बीजापुर और गोलकुंडा। इन दोनो राज्यो को सन् 1686-7 में औरंगज़ेब ने हराकर मुग़ल साम्राज्य मे मिला लिया। इस प्रकार मुग़ल साम्राज्य अफ़ग़ानिस्तान से लेकर तमिलनाडू तक फैल गया। इस समय मुग़ल साम्रज्य अपनी शक्ति और विस्तार की चरम सीमा पर पहुंच गया।

औरंगज़ेब

नक्शे में दोखो, सन् 1707 में मुग़ल साम्राज्य कहां से कहां तक फैला था?

बीजापुर और गोलकुंडा इतने ताकतवर थे कि सिर्फ सेना के बल पर उन्हें हराया न जा सकता था। दक्षिण के राज्यों को हराने के लिए उन राज्यों के प्रमुख सेनापति व अधिकारियो को ऊंचे पद व जागीरें दी गयी। ये अमीर मुग़लों के साथ हो गये और इस प्रकार औरंगज़ेब बीजापुर और गोलकुंडा जैसे ताकतवर राज्यों को हरा पाया। अब जितना लगान उन दो राज्यों से मिलता उतना ही वहां के अमीरो व अन्य नये अमीरो पर खर्च होने लगा। इस प्रकार राज्य जीत कर मुग़लो को बहुत फायदा नहीं हुआ और पुराने अधिकारियो के लिए जागीरो की कमी पड़ती रही।

खेती फैलाने की कोशिश और राज्य फैलाने की कोशिश दोनो ही से जागीरो की कमी की समस्या का हल नही निकल पाया। औरंगज़ेब के समय मे और उसके बाद भी मुग़ल अमीरो को देने के लिए जागीरो की कमी पड़ती रही।

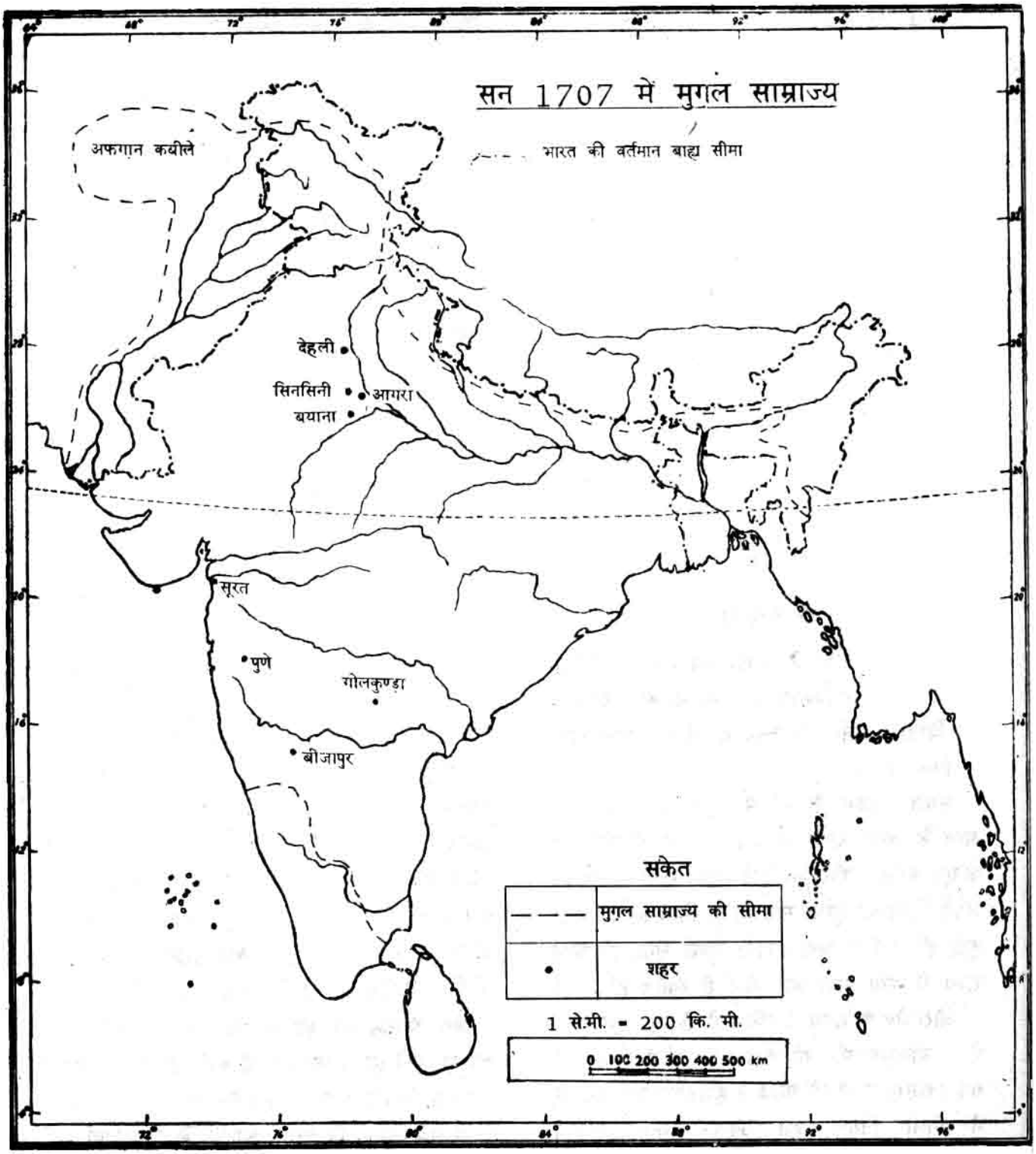

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.

The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987

राज्य का विस्तार करके भी जागीर की समस्या हल क्यों नहीं हुई - अपने शब्दों में कहो।

शिवाजी और मराठे

तुमने पढ़ा कि कैसे अफग़ान कबीले, जाट ज़मीदार और अहोम राजा अपना अलग राज्य बनाना चाहते थे और मुग़लों की हुकूमत को स्वीकार नहीं कर रहे थे। दक्षिण भारत में भी औरंगज़ेब को एक ऐसी ताकत से भिड़ना पड़ा जिसे जीतना आसान न था।

ये थे महाराष्ट्र और कर्नाटक क्षेत्र में रहने वाले मराठे लोग। वे अच्छे सैनिक थे और उन्हें बीजापुर, गोलकुंडा व मुग़ल राज्य की सेनाओं में भर्ती किया जाता था।

एक मराठा सेनापति था शाहजी भोंसले। उसका बेटा था शिवाजी। शाहजी ने शिवाजी को अपनी एक जागीर - पुणे दे रखी थी। शिवाजी साहसी था और सोचता था कि वह दूसरे राजाओं की सेवा क्यों करे? खुद का राज्य क्यों नहीं बना ले? मराठों का अलग राज्य बनाने का उद्देश्य लेकर शिवाजी 18 साल की उम्र से ही एक सेना इकट्ठी करने लगा।

वह आसपास के ज़मीदारों के किलों पर हमला बोल कर उनके किलों को लूट आता था। धीरे-धीरे उसने कई किलों को अपने कब्ज़े में कर लिया।

इस बीच दक्षिण भारत में मुग़लों का राज्य भी फैल रहा था। शिवाजी को मुग़ल सेना से भी टक्कर लेनी पड़ी। शिवाजी ने अपनी छोटी-सी सेना के बल पर कई बार मुग़लों की विशाल सेनाओं को हराया।

ऐसी बड़ी सेनाओं से लड़ने का उसके पास एक निराला तरीका था। वह दुश्मन से सीधे न लड़कर उस पर अचानक हमला करके क्षति पहुंचाता और भाग जाता था। उसकी सेना बड़ी तेज़ी से एक जगह से दूसरी जगह पहुंच पाती थी, जबकि मुग़ल सेना बड़ी लंबी-चौड़ी होने के कारण धीरे-धीरे चलती थी। बार-बार अचानक हमले करके शिवाजी मुग़ल सेना को थका देता और फिर सीधे टक्कर लेकर उन्हें हराता था। इसे छापामार युद्ध कहा जाता है।

मराठा राज्य

शिवाजी महाराष्ट्र में अपना राज्य बनाने में सफल हुआ। पर उसे अपना राज्य बढ़ाने के लिए लगातार

शिकार करता औरंगज़ेब

शिवाजी

आसपास के अन्य राज्यों पर हमला करना पड़ता था। उसे बड़ी ताकतवर सेना रखने की ज़रूरत थी और इसके लिए धन चाहिए था। उसने अपने राज्य के किसानो से लगान वसूल करने की व्यवस्था की। इसके अलावा और अधिक धन की व्यवस्था करने के लिए उसने दूसरे राज्यो के किसानो व व्यापारियो से धन वसूल करने की कोशिश भी की। उसने दूसरे राज्यो के लोगों से यह मांग की कि जितनी लगान वे अपने राजा को हर साल देते हैं, उसका एक चौथाई हिस्सा अलग से शिवाजी को सौंपे। इस लगान को चौथ कहा जाता था। दूसरे राज्यों के कई गांव-शहरो के लोग मराठों को चौथ देने पर मज़बूर थे क्योंकि वे मराठा सैनिको के हमलो से डरते थे। जो लोग चौथ नही देते थे उन्हें हर साल मराठा सैनिको के हमलों का सामना करना पड़ता था।

चौथ से मिला धन मराठा सेनापतियों यानी सरदारो के बीच बांट दिया जाता था। ये सरदार ही शिवाजी के राज्य के अलग-अलग हिस्सो पर शासन करते थे।

मराठा सरदारो के हमलों का सामना करते-करते मुग़ल सेना थक गयी। इन्हीं मुकाबलो के दौरान औरंगज़ेब के जीवन का अंत भी हो गया।

मराठों के बारे में छह महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

चौथ क्या थी, सही विकल्प चुनो-

क. अपने राज्य के किसानों से ली गयी लगान।

ख. दूसरे राज्य के किसानों से ली गयी लगान।

औरंगज़ेब जिन समस्याओं से जूझ रहा था उनकी सूची बनाओ।

मुग़ल साम्राज्य का संकट और औरंगज़ेब की नीतियां

बादशाह बनने के 10 साल बाद औरंगज़ेब ने एक आदेश दिया कि उन सारे मंदिरो को, जिन्हें हाल ही में बनाया गया हो, तोड़ डाला जाये और केवल पुराने मंदिरो को रहने दिया जाये। उसने उन मंदिरो को भी नष्ट करने का आदेश दिया जहां पर मुसलमान हिंदू धर्म का अध्ययन करने आते थे ताकि वे ऐसा नही कर सके। इस प्रकार औरंगज़ेब के शासनकाल मे अनेक प्रसिद्ध मंदिर तोड़ डाले गये।

बादशाह बनने के 21 साल बाद सन् 1679 में औरंगज़ेब ने हिंदुओं पर जज़िया कर फिर से लागू किया। किसानो, व्यापारियों और कारीगरो ने इसका कड़ा विरोध किया।

औरंगज़ेब की इन नीतियो से उसके बहुत से अमीर भी खुश नहीं थे। वे समय-समय पर औरंगज़ेब को समझाने की कोशिश करते थे कि यह नीति साम्राज्य के हित में नहीं है।

उसके दरबार के कई मुसलमान अमीर भी उसकी धार्मिक नीति का समर्थन नही करते थे। औरंगज़ेब के सबसे प्रमुख अमीरों में महाबत खान भी था। उसने बादशाह को चिट्ठी लिख कर अपना विरोध प्रकट किया। उसने लिखा था कि औरंगज़ेब की नीतियां न धर्म के लिए अच्छी हैं और न ही साम्राज्य के लिए।

पर औरंगज़ेब अपनी नीतियो पर अटल रहा। उसके

मरने के बाद ही जज़िया फिर से हटाया गया।

औरंगज़ेब की इन नीतियों का क्या कारण हो सकता है? कुछ इतिहासकार कहते हैं कि वह कट्टर था इसलिए उसने मंदिर तोड़े और जज़िया लगाया। पर अगर ऐसा था तो उसने बादशाह बनते ही ये कदम क्यों नहीं उठाये? अपने शासन के 10-20 साल बाद ही उसे क्या ज़रूरत महसूस हुई कि उसने हिंदुओं के खिलाफ कुछ कट्टर नीतियां अपनाईं?

मुग़ल दरबार में परंपरावादी मौलवी

इस प्रश्न पर विचार करने से हम समझ पाते हैं कि औरंगज़ेब धीरे-धीरे कई संकटों से घिरता जा रहा था। तुम इन संकटों के बारे में पाठ के शुरू में ही जान चुके हो; जगह-जगह विद्रोह, जागीरों की कमी, अमीरों में असंतोष, मराठों से परेशानी - औरंगज़ेब इन सब समस्याओं का हल नहीं निकाल पा रहा था।

इस संकट की स्थिति में औरंगज़ेब ने कोशिश की कि उसे राज्य के अधिक से अधिक लोगों का समर्थन व सहयोग मिले। उसने मराठों, राजपूतों, मुसलमानों - सभी का साथ पाने की कोशिश की। राज्य में कई लोग - मौलवी, अमीर व अन्य लोग, परंपरावादी मुसलमान थे। राज्य के संकट के समय में उनको अपने साथ करने के लिए औरंगज़ेब ने हिंदुओं के खिलाफ कुछ कदम उठाना तय किया। उसने जज़िया लगाया व मंदिर तुड़वाए।

पर हिंदू लोगों का समर्थन भी उसे चाहिए था। वह खासतौर से राजपूतों और मराठों को अपने साथ करना चाहता था। उसने बहुत बड़ी संख्या में मराठों को अपने शासन में पद दिये। उसने राजपूत अमीरों को भी खूब तरक्की दी। उन्हें साम्राज्य के महत्वपूर्ण पद दिए। राजा जय सिंह और महाराजा जसवंत सिंह उसके सबसे निकट सलाहकारों में से थे। औरंगज़ेब के शासनकाल में अमीरों में हिंदुओं की संख्या लगातार बढ़ती गयी। अकबर के समय में कुल 22 हिंदू अमीर थे और शाहजहां के समय में कुल 98 जबकि औरंगज़ेब के समय में कुल 182 हिंदू अमीर थे जो उसकी धार्मिक नीति के बावजूद उसके साथ रहे।

शायद ऐसे ही राजनैतिक कारणों की वजह से औरंगज़ेब ने कई मंदिरों व मठों को ज़मीन व पैसे दान में दिये। उज्जैन के महाकाल मंदिर और चित्रकूट के राम मंदिरों में ऐसे दान के फरमान आज भी देखे जा सकते हैं।

क्या तुम्हें अकबर और औरंगज़ेब के बीच कुछ समानता नज़र आ रही है? स्पष्ट करो।

जागीरों का संकट और मुग़ल साम्राज्य का टूटना

तुमने पहले पढ़ा था कि मुग़ल शासन से किसान परेशान थे और जगह-जगह विद्रोह करने लगे थे। ज़मींदार भी अपना स्वतंत्र राज्य बनाने की इच्छा से विद्रोह करने लगे थे। इन विद्रोहों के कारण जागीरदार किसानों से पर्याप्त लगान इकट्ठा नहीं कर पा रहे थे।

और उनकी आमदनी कम होने लगी थी।

आमदनी कम होते जाने की वजह से जागीरदार कम संख्या मे घुड़सवार रखने लगे। जागीरदारो के घुड़सवार कम हो गये तो वे ज़मीदारो के विद्रोह को दबा नही पाये।

ये तो उन जागीरदारो की बात है जिनके पास जागीरें थी। लेकिन बहुत सारे अमीरो को जागीर भी नही मिल रही थी। अमीर बहुत थे और जागीरें कम। तो सारे अमीरो के लिए पर्याप्त जागीरें नही बची। बहुत से अमीर इसी कोशिश मे लगे रहते थे कि उन्हें किसी तरह जागीर मिल जाये और वे भी ऐसी जगह मिले जहां कोई किसानो और ज़मीदारो के विद्रोह नही हैं। अच्छी जागीरें पाने के लिए अमीर आपस मे लड़ने झगड़ने लगे। एक बार अगर जागीर मिल जाये तो जागीरदार कोशिश करते थे कि उस जागीर के किसानो से ज़्यादा से ज़्यादा लगान वसूल किया जाये। उन्होने बादशाह के लगान के बारे मे नियमो व कानूनो का पालन करना छोड़ दिया।

हमने देखा कि सारे अमीरो का दो तीन वर्षो मे तबादला हो जाता था। साथ ही उनकी जागीरो का भी तबादला हो जाता था। मगर अब जिनका तबादला होता था उन्हें फिर से जागीर मिलने मे बहुत समय लग जाता था। इस कारण अमीर यह कोशिश करने लगे कि उनका तबादला ही न हो और वे एक ही जगह रहें। अगर बादशाह उनका तबादला भी कर दे तो वे दूसरी जगह जाने से मना कर देते थे।

इस तरह धीरे-धीरे अमीर बादशाह के आदेशो की अवहेलना करने लगे। कई सूबेदार अपने-अपने सूबो मे स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे। इस प्रकार बंगाल, अवध, हैदराबाद के सूबेदार स्वतंत्र हो गये।

कई ज़मीदार जिन्होने विद्रोह किया, उन्होंने स्वतंत्र राज्य बनाये। मराठो का अलग राज्य बना, राजा राम जाट के वंशजो ने एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। पंजाब के सिखो ने भी स्वतंत्र राज्य बनाये। ये सब सिर्फ नाम के लिए अपने को मुग़ल बादशाह के अधीन मानते रहे पर वास्तव मे स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे। बस, दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र मे मुग़ल बादशाह का हुकुम चलता रहा। इस तरह विशाल मुग़ल साम्राज्य, जिसपर एक बादशाह की हुकूमत चलती थी, टूट-टूट कर बिखर गया।

अभ्यास के प्रश्न

1. औरंगज़ेब के सामने दो बड़ी समस्याएं थी - किसानो-ज़मीदारो के विद्रोह और जागीर की कमी। इन समस्याओ को कुछ वाक्यो मे समझाओ।
2. जागीर की कमी की समस्या दूर करने के लिए औरंगज़ेब ने कौन से उपाय किए? इन उपायो से वह सफल क्यो नही हुआ?
3. शिवाजी की सेना मुग़लो की सेना को किस तरह हरा पाती थी?
4. शिवाजी के राज्य को धन कई तरह से मिलता था -
   1. अपने राज्य के गांव से लगान
   2 ----------
   3 ----------
5. औरंगज़ेब ने हिंदुओ के खिलाफ कुछ कदम उठाए और पक्ष मे भी - दोनो बातो के दो-दो उदाहरण लिखो।
6. सही गलत बताओ -
   अ. औरंगज़ेब ने हिंदू धर्म के विरोध में जो कदम उठाए, उनका सारे मुसलमानो ने समर्थन किया।
   ब. औरंगज़ेब ने हिंदू धर्म के विरोध मे कदम उठाए, इसके कारण हिंदू अधिकारियो ने औरंगज़ेब का साथ छोड़ दिया।
7. अ. औरंगज़ेब के शासन के आखिरी दिनो मे जागीरदार बादशाह के आदेशो का उल्लंघन क्यो और किस तरह से करने लगे थे?
   ब. औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद मुग़ल साम्राज्य कई अलग-अलग, स्वतंत्र राज्यो मे किस तरह बंट गया - समझाओ।